प्रदूषित होता भूजल : पर्यावरण के लिए गंभीर चुनौती

शशांक शेखर ममगाईं
सेंट थेरेसास स्कूल, श्रीनगर गढ़वाल

आज कलयुग में आपने गौर किया होगा कि जब भी वैज्ञानिक दूसरे ग्रहों और उपग्रहों में जीवन के आसार खोजता है तो सर्वप्रथम वह एक वस्तु खोजता है जो है – जल। जल जीवन की वह कड़ी है जिसके बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। सर्वविदित है कि इस संसार में जल की उत्पत्ति के पश्चात् ही जीवन की उत्पत्ति हुई। अतः जल हमारी सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता है। यह तो सब जानते हैं कि पृथ्वी को 'नीला ग्रह' भी कहते हैं। वह इसलिए क्योंकि इस ग्रह का तीन चौथाई भाग पानी है। परंतु क्या यह सब पानी इस्तेमाल करने लायक है ? नहीं। पृथ्वी पर 75% पानी है जिसमें से केवल 3% ही पीने लायक है एवं इस तीन प्रतिशत का भी 2/3 भाग हमारी पहुँच में नहीं है। कुल मिलाकर पूरे 75% में केवल 1% ही हम इस्तेमाल कर सकते हैं जिसे पूरी दुनिया के लागों ने अपने रोजमर्रा के कामों में इस्तेमाल करना है।

पानी अथवा जल प्रकृति द्वारा मनुष्यों को प्रदान किया गया एक अनमोल उपहार है जिसके बिना जीवन संभव नहीं। यह हमारे जीवन का एक अटूट हिस्सा है। हमारे हर महत्वपूर्ण काम इस पर निर्भर हैं। हम इसे पीने में, सफाई करने में, खाना बनाने में, कपड़े व बर्तन धोने तथा अन्य कार्यों में इस्तेमाल करते हैं। हमारे शरीर का लगभग 75% भाग जल होता है। हम बिना भोजन के कुछ दिन भले ही जीवित रह पाएं किन्तु जल के बिना हमारा जीवन असंभव है। जल प्रदूषणमुक्त तथा पीने लायक हो एवं जल के लिए भविष्य में कोई विवादित स्थिति न हो, यह हमारा उद्देश्य होना चाहिए।

जल मुख्य रूप से दो प्रकार का होता है – भूजल और धरातलीय जल। भूजल वह जल है जो सदियों एवं करोड़ों वर्षों से मिट्टी में से अवशोषित होकर धरती के भीतर जमा हुआ है। यह जल अत्यंत स्वच्छ एवं छना हुआ है। जब भी कभी या कहीं पानी की कमी हो वहाँ लोग इसी भूजल का प्रयोग करते हैं। धरातलीय जल वह जल है जो पृथ्वी की सतह पर बहता है या स्थगित है – जिनमें नदियाँ, जलाशय आदि स्त्रोत आते हैं। यह जल या तो पहाड़ों के हिमनदों से उत्पन्न होता है या वर्षा जल कहीं पर जमा होने पर। यह पानी लोग प्रायः इस्तेमाल करते हैं। हमारे लगभग सारे कामों में यही इस्तेमाल होता है।

आज के युग में शहरीकरण और जनसंख्या वृद्धि के कारण उद्योगों और कारखानों की स्थापना के साथ–साथ मनुष्य ने अपने रहने के लिए जलाशयों, तालाबों और अन्य जल स्रोतों की जगह पर बड़ी–बड़ी इमारतें खड़ी कर दी हैं, जिसके फलस्वरूप आज तालाब, कुएं, जलाशय और बावड़ियां कम हो गयी हैं। कई देशों में तो नदियाँ एवं अन्य जलाशय साफ होते हैं परंतु कुछ देशों में वह प्रदूषित हो चुके हैं। उदाहरण के लिए इग्लैंड की थेम्स नदी को देखें। वह दुनिया की सबसे स्वच्छ नदी है। भारतवर्ष में नदियों को माँ का दर्जा दिया जाता है परंतु बड़े दुःख का विषय है कि आज यहां की कई नदियों को लोगों ने कूड़ा–करकट ले जाने का साधन बना लिया है।

भारत व अन्य कुछ देशों की स्थिति देखते हुए जल संरक्षण मेरे दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया है। यदि यह न किया गया तो आगे चलकर पृथ्वी से जीवन का नामो–निशां मिटने की नौबत आ जाएगी। सर्वप्रथम तो ये कि जितनी भी नदियां, जलाशय इस धरती पर हैं उन सभी को स्वच्छ रखना चाहिए। शहर अथवा गांव का कूड़ा नदियों में न डालकर मिट्टी में गाढ़ देना चाहिए ताकि वह अपघटित हो जाए और जो इस प्रक्रिया से न गुजर सकें, जैसे प्लास्टिक, उनको बनाना बंद कर देना चाहिए। दूसरा माध्यम है वर्षा जल को संरक्षित करना। शहरों में यह

सर्वोत्तम माध्यम है जिससे पानी को बचाया जा सकता है। घरों की छतों पर जो भी पानी पड़ रहा है उसे पाइपों के जरिए एक टंकी या बोरवेल में जमा कर लिया जाए एवं उसी पानी से अपना काम करना। गांवों में एक बड़ा गड्ढा खोदकर उसमें बारिश का पानी जमा करना तथा उस पानी को इस्तेमाल करना। इन तरीकों से किसी भी देश में पानी की समस्या हल हो सकती है।

जल हमारे जीवन की सबसे महत्वपूर्ण चीजों में से सर्वोपरि है। इसी जल के कारण सदियों से एक जीवन चक्र चल रहा है जिसके हम एक भाग हैं। इसके बिना जीवन असंभव है। आज के समय में धरातलीय जल अर्थात् सतही जल की दुर्दशा देखी जा सकती है जो कि मनुष्य द्वारा ही की गयी है। आज बचा हुआ एकमात्र जल स्रोत भूजल भी प्रदूषित हो रहा है। इस प्रदूषण के कई कारण हैं। जब हम नदियों को दूषित करते हैं, तो वही दूषित, रासायनिक पानी मिट्टी से अवशोषित होकर नीचे जाता है और फिर वही पानी हम इस्तेमाल करते हैं। जब हम खेतों में रासायनिक खाद डालते हैं तो वही खाद जब बारिश के पानी में मिलती है तो वही खाद का घोल अवशोषित होकर भूजल को प्रदूषित करता है।

भूजल प्रदूषण कई हद तक अत्यंत बुरा एवं खतरनाक होता है। जब मनुष्य जल को दूषित करता है तो वह यह नहीं देखता कि इससे प्रकृति एवं उस पर क्या असर पड़ेगा। यह असर बड़ा ही खतरनाक होता है। जब हम इस भूजल का यह सोचकर ज्यादा इस्तेमाल करते हैं कि यह जल स्वच्छ है तब इसका जलस्तर घट जाता है जिसका पर्यावरण पर बेहद बुरा असर पड़ता है। अरबों वर्षों में स्वच्छ एवं जमा हुआ पानी आज चंद महीनों में लुप्त होने को है। मनुष्य एवं अन्य जीवों पर भी इसका गहरा असर पड़ता है। जब हम यही अपने द्वारा दूषित किए गए पानी को पीते हैं अथवा अन्य कामों में इस्तेमाल करते हैं तो हमारी खुद की सेहत पर बुरा प्रभाव पड़ता है। आज के युग में इसी कारण कई मनुष्य अपने जीवन से हाथ धो बैठते हैं।

इस प्रकार हमने देखा कि भूजल प्रदूषण से हम पर और पर्यावरण पर क्या असर पड़ रहा है, जैसे हर मुसीबत का एक समाधान होता है, इसका भी है। भूजल पहले नदियों के तलों से अवशोषित हो, पृथ्वी के भीतर जमा होता है। अतः स्वच्छ अरासायनिक पानी के लिए हमें सर्वप्रथम नदियों एवं अन्य जलाशयों को स्वच्छ रखना होगा। दूसरी समस्या है भूजल स्तर घटने की। आज के युग में जनसंख्या वृद्धि के कारण ज्यादा मकान बन रहे हैं। अतः कोई भी खुली जमीन बच नहीं रही है जिससे कि वर्षा जल अवशोषित हो सके। अतः सरकार को पूरे देश में अथवा हमें अपने मोहल्ले या शहर में कुछ जमीन ऐसी छोड़नी चाहिए जिससे पानी अवशोषित हो सके और भूजल स्तर बढ़ सके। इन तरीकों से हम भूजल को पृथ्वी से लुप्त होने से बचा सकते हैं। भूजल हमारी पृथ्वी की वह अमूल्य धरोहर है जो पृथ्वी में बूंद–बूंद करके जमा हुआ है। परंतु मनुष्य इस बात को नहीं समझ रहा है कि इस धरोहर को वह चन्द सालों में ही खत्म कर रहा है। इसलिए हमें यह बात समझनी होगी वरना कहीं ऐसा न हो कि आगे चलकर पृथ्वी अन्य ग्रहों की तरह केवल पत्थर का ग्रह बनकर रह जाए और इस ग्रह से जीवन का हर कण लुप्त हो जाए। अतः हमें इस अमूल्य धरोहर को जी–जान से बचाना होगा। हमें पानी की सही ढंग से देखभाल करनी होगी तभी पानी भी हमारी सही ढंग से देखभाल करेगा। नहीं तो आगे चलकर हमारे पास सोना, चाँदी सब होगा परंतु पीने को पानी नहीं होगा और पृथ्वी से जीवन लुप्त हो जाएगा।